

HINDI FILE



DREAM
FOR NATION



DARE
TO SERVE



DELIVER
WITH INTEGRITY

DAILY PRACTICE QUESTIONS

BEST FOR UPSC | UP PCS EXAM

DATE : **JULY 28, 2026**



Comprehensive
Coverage



Exam-Focused
Analysis



Concept Clarity
& Insights



Practice MCQs
with Explanation



Daily Updates,
Better Results



CONTACT INFO:

+91 92896 33341 | +91 96679 33341



EMAIL ID:

info@sixsigmaias.com



WEB PAGE:

www.sixsigmaias.com



ADDRESS:

C-6, GROUND FLOOR, SECTOR 2,
NEAR SECTOR 15 METRO STATION, NOIDA – 201301, UTTAR PRADESH

दैनिक अभ्यास प्रश्न - स्थैतिक भाग से

Q1. उत्तर वैदिक यज्ञ परंपरा और सामाजिक-राजनीतिक विकास के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

- वैदिक यज्ञों की बढ़ती जटिलता के कारण ब्राह्मणों का अनुष्ठानिक अधिकार बढ़ता गया, जबकि साथ ही क्षेत्रीय राजशाही की अवधारणा भी मजबूत हुई।
- महाजनपदों का उद्भव ब्राह्मण ग्रंथों में वर्णित अनुष्ठानिक प्रणाली का प्रत्यक्ष और तात्कालिक परिणाम था।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

- केवल एक
- दोनों कथन
- कोई भी कथन नहीं
- कथन 1 सही है, लेकिन कथन 2 को ऐतिहासिक साक्ष्य से अनुमानित नहीं किया जा सकता है

उत्तर:

-

स्पष्टीकरण:

कथन 1 सही है। उत्तर वैदिक काल के दौरान, राजसूय, वाजपेय और अश्वमेध जैसे विस्तृत यज्ञों ने ब्राह्मणों की प्रतिष्ठा और राजाओं की राजनीतिक वैधता दोनों को बढ़ाया। इन अनुष्ठानों ने जनजातीय नेतृत्व से लेकर अधिकार के अधिक क्षेत्रीय रूपों में संक्रमण को दर्शाया।

कथन 2 गलत है। हालांकि उत्तर वैदिक सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तनों ने राज्य के गठन में योगदान दिया, लेकिन महाजनपदों का उदय कृषि विस्तार, लोहे की तकनीक, शहरीकरण, अधिशेष उत्पादन और राजनीतिक समेकन सहित कई कारकों के संयोजन का परिणाम था। यह अकेले ब्राह्मणवादी अनुष्ठान परंपराओं का प्रत्यक्ष या तात्कालिक परिणाम नहीं था।

Q2. मध्यम प्राकृतिक गड़बड़ी के बाद एक परिपक्व वन पारिस्थितिकी तंत्र के दीर्घकालिक लचीलेपन को निम्नलिखित में से कौन सी पारिस्थितिक प्रक्रिया मुख्य रूप से निर्धारित करती है?

- सभी पोषण स्तरों पर अधिकतम प्रजाति समृद्धि
- समान पारिस्थितिक भूमिका निभाने वाली प्रजातियों के बीच कार्यात्मक अतिरेक (Functional redundancy)
- पोषक तत्वों के संचलन की परवाह किए बिना प्राथमिक उत्पादकता की उच्चतम दर
- उत्तराधिकार के दौरान आक्रामक प्रजातियों की पूर्ण अनुपस्थिति

उत्तर:

-

स्पष्टीकरण:

पारिस्थितिकी तंत्र का लचीलापन केवल प्रजातियों की संख्या की तुलना में कार्यात्मक विविधता पर अधिक निर्भर करता है। कार्यात्मक अतिरेक (Functional redundancy) का तात्पर्य है कि कई प्रजातियां समान पारिस्थितिक कार्य करती हैं; इसलिए, यदि गड़बड़ी के बाद एक प्रजाति में गिरावट आती है, तो अन्य प्रजातियां उसकी भरपाई कर सकती हैं और पारिस्थितिकी तंत्र की प्रक्रियाओं को बनाए रख सकती हैं।

विकल्प (a) आवश्यक रूप से सही नहीं है क्योंकि केवल उच्च प्रजाति समृद्धि लचीलेपन की गारंटी नहीं देती है।

विकल्प (c) गलत है क्योंकि कुशल पोषक तत्वों के संचलन के बिना उत्पादकता दीर्घकालिक पारिस्थितिकी तंत्र स्थिरता को बनाए नहीं रख सकती है।

विकल्प (d) अत्यधिक पूर्ण है। हालांकि आक्रामक प्रजातियां लचीलेपन को कम कर सकती हैं, लेकिन उनकी पूर्ण अनुपस्थिति पारिस्थितिकी तंत्र की रिकवरी का परिभाषित मानदंड नहीं है।

Q3. एक अर्थव्यवस्था में सार्वजनिक वस्तुओं और बाजार की विफलता के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. एक शुद्ध सार्वजनिक वस्तु की विशेषता उपभोग में गैर-प्रतिस्पर्धा (non-rivalry) और गैर-बहिष्करण (non-excludability) दोनों होती है।
2. मुफ्त-राइडर (free-rider) व्यवहार इसलिए उत्पन्न होता है क्योंकि उपभोक्ताओं को सार्वजनिक वस्तु के आनंद लेने से बाहर रखा जा सकता है।
3. सार्वजनिक वस्तुओं के प्रावधान में सरकारी हस्तक्षेप अक्सर इसलिए उचित ठहराया जाता है क्योंकि बाजार ऐसी वस्तुओं की कम आपूर्ति (under-provide) कर सकते हैं।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई नहीं

उत्तर:

- (b)

स्पष्टीकरण:

कथन 1 सही है। शुद्ध सार्वजनिक वस्तुएं गैर-प्रतिस्पर्धा और गैर-बहिष्करण दोनों को संतुष्ट करती हैं।

कथन 2 गलत है। फ्री-राइडिंग ठीक इसलिए होती है क्योंकि व्यक्तियों को भुगतान किए बिना भी वस्तु का उपभोग करने से बाहर नहीं किया जा सकता है।

कथन 3 सही है। चूंकि निजी उत्पादक गैर-भुगतान करने वाले उपयोगकर्ताओं से आसानी से लागत वसूल नहीं कर सकते हैं, इसलिए बाजार सार्वजनिक वस्तुओं की कम आपूर्ति करते हैं, जिससे सरकार द्वारा प्रावधान या वित्तपोषण आवश्यक हो जाता है।

अतः, कथन 1 और 3 सही हैं।

Q4. भारत में संवैधानिक शासन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. संवैधानिक सर्वोच्चता का तात्पर्य है कि राज्य का प्रत्येक अंग अपना अधिकार संविधान से प्राप्त करता है।
2. न्यायिक समीक्षा अदालतों को उन कानूनों को अमान्य करने में सक्षम बनाती है जो संवैधानिक प्रावधानों का उल्लंघन करते हैं।
3. भारत में संसदीय संप्रभुता यूनाइटेड किंगडम में अपनाए गए सिद्धांत के समान है।
4. संविधान संवैधानिक संशोधनों की अनुमति देता है, लेकिन ऐसे संशोधन मूल संरचना (Basic Structure) के सिद्धांत के तहत न्यायिक जांच के अधीन रहते हैं।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) केवल तीन
- (d) सभी चार

उत्तर:

- (c)

स्पष्टीकरण:

कथन 1 सही है। संविधान सर्वोच्च कानून है, और सभी संस्थान इससे अपना अधिकार प्राप्त करते हैं।

कथन 2 सही है। न्यायिक समीक्षा संवैधानिक सर्वोच्चता सुनिश्चित करने वाला एक मौलिक संवैधानिक तंत्र है।

कथन 3 गलत है। यूनाइटेड किंगडम के विपरीत, भारत में संसद पूरी तरह से संप्रभु नहीं है; इसकी विधायी शक्तियां संविधान और न्यायिक समीक्षा द्वारा सीमित हैं।

कथन 4 सही है। केशवानंद भारती के फैसले के बाद से, संवैधानिक संशोधन मूल संरचना के सिद्धांत के अधीन हैं।

अतः, कथन 1, 2 और 4 सही हैं।

Q5. निम्नलिखित अभिकथन (Assertion) और कारणों (Reasons) पर विचार कीजिए:

अभिकथन (A): पृथ्वी की सतह पर तापमान का वितरण अकेले अक्षांश की तुलना में सौर ऊर्जा की विभेदक प्राप्ति और पुनर्वितरण से अधिक प्रभावित होता है।

कारण I (Reason I): वायुमंडलीय परिसंचरण और महासागरीय धाराएं कम अक्षांशों से उच्च अक्षांशों की ओर गर्मी का पुनर्वितरण करती हैं।

कारण II (Reason II): ऊंचाई, महाद्वीपियता (continentality) और बादलों का आवरण समान अक्षांश पर भी स्थानीय थर्मल स्थितियों को काफी हद तक संशोधित कर सकते हैं।

निम्नलिखित में से कौन सा सही है?

- (a) अभिकथन सही है, कारण I सही है, कारण II गलत है।
- (b) अभिकथन सही है, कारण I गलत है, कारण II सही है।
- (c) अभिकथन सही है, और कारण I तथा कारण II दोनों सही हैं, और दोनों कारण मिलकर अभिकथन की व्याख्या करते हैं।
- (d) अभिकथन गलत है, लेकिन दोनों कारण सही हैं।

उत्तर:

(c)

स्पष्टीकरण:

अभिकथन सही है। हालांकि अक्षांश आने वाले सौर विकिरण के कोण को निर्धारित करता है, वास्तविक तापमान वितरण कई संशोधक कारकों पर निर्भर करता है।

कारण I सही है क्योंकि वैश्विक वायुमंडलीय परिसंचरण और महासागरीय धाराएं भूमध्यरेखीय से ध्रुवीय क्षेत्रों में गर्मी का परिवहन करती हैं, जिससे अक्षांश तापमान विपरीतताएं कम होती हैं।

कारण II भी सही है। ऊंचाई बढ़ने के साथ तापमान कम होता है, महाद्वीपियता मौसमी थर्मल सीमा को प्रभावित करती है, और बादलों का आवरण आने वाले और जाने वाले विकिरण को प्रभावित करता है।

ये दोनों कारण मिलकर व्यापक रूप से यह समझाते हैं कि पृथ्वी के तापमान वितरण को अकेले अक्षांश से क्यों नहीं समझाया जा सकता है।

SIXSIGMA IAS
Dream | Dare | Deliver

दैनिक अभ्यास प्रश्न – करंट अफेयर्स अनुभाग से

Q1. आसियान-भारत वस्तु व्यापार समझौते (AITIGA) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. AITIGA की चल रही समीक्षा का उद्देश्य मूल के नियमों (Rules of Origin) को सरल बनाना और तीसरे देशों के माध्यम से आयात की परिधि (circumvention) से संबंधित चिंताओं को दूर करना है।
2. AITIGA, आसियान-भारत मुक्त व्यापार क्षेत्र (AIFTA) का हिस्सा है, जिसमें वर्तमान में वस्तुओं, सेवाओं और निवेश में व्यापार शामिल है।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) कोई भी कथन नहीं
- (d) कथन 2 सही है, लेकिन कथन 1 गलत है

उत्तर: (b)

स्पष्टीकरण: दोनों कथन सही हैं।

- **कथन 1:** सही है। भारत ने व्यापारिक विचलन (trade diversion) और तीसरे देशों के माध्यम से सामानों के रूटिंग को रोकने के लिए AITIGA समीक्षा के दौरान लगातार सख्त और अधिक पारदर्शी मूल नियमों की मांग की है।
- **कथन 2:** सही है। आसियान-भारत मुक्त व्यापार क्षेत्र में तीन स्तंभ शामिल हैं - वस्तु व्यापार (AITIGA), सेवा व्यापार, और निवेश समझौता।

इस समीक्षा का उद्देश्य पूरी तरह से एक नया FTA परक्रामित करने के बजाय समझौते को अधिक संतुलित, उपयोगकर्ता के अनुकूल और वर्तमान व्यापार वास्तविकताओं के प्रति उत्तरदायी बनाना है।

Q2. ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में अपनाए गए गुवाहाटी घोषणा (Guwahati Declaration) के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही **नहीं** है?

- (a) इसने उभरती प्रौद्योगिकियों और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में ब्रिक्स सदस्यों के बीच सहयोग को मजबूत करने पर जोर दिया।
- (b) इसने समकालीन वास्तविकताओं को प्रतिबिंबित करने के लिए वैश्विक शासन संस्थानों में सुधार करने की अपनी प्रतिबद्धता को दोहराया।
- (c) इसने औपचारिक रूप से सभी मौजूदा बहुपक्षीय वित्तीय संस्थानों को पूरी तरह से एक ब्रिक्स-ओनली फ्रेमवर्क से बदलने का समर्थन किया।
- (d) इसने सतत विकास में ग्लोबल साउथ के बीच अधिक सहयोग पर जोर दिया।

उत्तर: (c)

स्पष्टीकरण: गुवाहाटी घोषणा संयुक्त राष्ट्र, आईएमएफ और विश्व बैंक जैसे वैश्विक संस्थानों को पूरी तरह से बदलने के बजाय उनमें सुधार की वकालत करती है।

- (a) सही है।
- (b) सही है।
- (d) सही है।
- (c) गलत है, जिससे यह सही उत्तर बनता है।

यह घोषणा मौजूदा संस्थानों को खत्म करने के बजाय एक अधिक प्रतिनिधि और न्यायसंगत वैश्विक शासन वास्तुकला बनाने के ब्रिक्स के व्यापक उद्देश्य को दर्शाती है।

Q3. परफॉर्मेंस ग्रेडिंग इंडेक्स (PGI) 2.0 के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. PGI 2.0 कई परिणाम-आधारित संकेतकों (outcome-based indicators) के माध्यम से स्कूली शिक्षा में राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के प्रदर्शन का मूल्यांकन करता है।
2. पहले के PGI ढांचे के विपरीत, PGI 2.0 शासन से संबंधित मापदंडों को पूरी तरह से बाहर करता है और विशेष रूप से छात्र सीखने के परिणामों पर ध्यान केंद्रित करता है।
3. PGI 2.0 का उद्देश्य अंतर-राज्यीय तुलना को सक्षम करके सहकारी और प्रतिस्पर्धी संघवाद को प्रोत्साहित करना है।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं? (a) केवल एक (b) केवल दो (c) सभी तीन (d) कोई नहीं

उत्तर: (b)

स्पष्टीकरण:

- **कथन 1:** सही है। PGI 2.0 कई मापने योग्य संकेतकों का उपयोग करके शैक्षिक प्रदर्शन का आकलन करता है।
- **कथन 2:** गलत है। शासन, बुनियादी ढांचा, पहुंच, समानता और प्रबंधन PGI 2.0 के अभिन्न घटक बने हुए हैं।
- **कथन 3:** सही है। मुख्य उद्देश्यों में से एक प्रदर्शन बेंचमार्किंग के माध्यम से सहकारी और प्रतिस्पर्धी संघवाद दोनों को बढ़ावा देना है।

अतः, कथन 1 और 3 सही हैं।

Q4. इंदिरा पॉइंट (Indira Point) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह भारत का सबसे दक्षिणी बिंदु है और ग्रेट निकोबार द्वीप पर स्थित है।
2. यह वह बिंदु है जहां अंडमान सागर बंगाल की खाड़ी से मिलता है।
3. 2004 की हिंद महासागर सुनामी के बाद, टेक्टोनिक आंदोलनों के कारण इंदिरा पॉइंट पर स्थित लाइटहाउस में स्थायी धंसाव (subsidence) का अनुभव हुआ।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं? (a) केवल एक (b) केवल दो (c) सभी तीन (d) कोई नहीं

उत्तर: (b)

स्पष्टीकरण:

- **कथन 1:** सही है। इंदिरा पॉइंट ग्रेट निकोबार द्वीप पर स्थित है और भारत का सबसे दक्षिणी भूमि बिंदु है।

- **कथन 2:** गलत है। इंदिरा पॉइंट बंगाल की खाड़ी, अंडमान सागर और हिंद महासागर के मिलन स्थल के पास स्थित है, लेकिन इसे पारंपरिक रूप से केवल अंडमान सागर और बंगाल की खाड़ी के मिलन बिंदु के रूप में परिभाषित नहीं किया गया है।
- **कथन 3:** सही है। 2004 के भूकंप और सुनामी के दौरान, भूमि कई मीटर नीचे धंस गई, जिससे लाइटहाउस आंशिक रूप से जलमग्न हो गया।

इसलिए, कथन 1 और 3 सही हैं।

Q5. हुम्मस ट्रेल (Hummus Trail) पहल के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. हुम्मस ट्रेल एक सांस्कृतिक कूटनीति पहल है जिसका उद्देश्य साझा पाक विरासत के माध्यम से लोगों से लोगों के बीच संबंधों को मजबूत करना है।
2. यह पहल हुम्मस को एक देश से संबंधित विशेष रूप से संरक्षित भौगोलिक संकेत (GI) के रूप में मान्यता देती है।
3. यह पहल भोजन कूटनीति के माध्यम से पर्यटन, अंतर-सांस्कृतिक संवाद और क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा देती है।
4. यह अवधारणा अंतरराष्ट्रीय संबंधों में नरम शक्ति (soft power) के साधन के रूप में गैस्ट्रोनोंमी (gastronomy) के बढ़ते उपयोग को दर्शाती है।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं? (a) केवल एक (b) केवल दो (c) केवल तीन (d) सभी चार

उत्तर: (c)

स्पष्टीकरण:

- **कथन 1:** सही है। यह पहल साझा पाक परंपराओं के माध्यम से अंतर-सांस्कृतिक समझ को बढ़ावा देना चाहती है।
- **कथन 2:** गलत है। हुम्मस को व्यापक रूप से लेवेंट की साझा पाक विरासत के हिस्से के रूप में माना जाता है, और किसी भी एक देश के पास विशेष अंतरराष्ट्रीय स्वामित्व नहीं है।
- **कथन 3:** सही है। पर्यटन और अंतर-सांस्कृतिक जुड़ाव को बढ़ावा देने के लिए गैस्ट्रोनोंमी का तेजी से उपयोग किया जाता है।
- **कथन 4:** सही है। पाक कूटनीति (culinary diplomacy) नरम शक्ति के एक मान्यता प्राप्त उपकरण के रूप में उभरी है।

अतः, कथन 1, 3 और 4 सही हैं।

Q6. निम्नलिखित स्थानों पर विचार कीजिए:

1. एन्नोर क्रीक (Ennore Creek)
2. पुलिकट झील (Pulicat Lake)

3. कोसास्थलाईयार नदी (Kosasthalaiyar River)
4. बकिंघम नहर (Buckingham Canal)

कामराज पोर्ट उपर्युक्त में से कितनों से सबसे निकटता से जुड़ा हुआ है? (a) केवल एक (b) केवल दो (c) केवल तीन (d) सभी चार

उत्तर: (d)

स्पष्टीकरण: कामराज पोर्ट (पूर्व में एन्नोर पोर्ट), जो चेन्नई के पास कोरोमंडल तट पर स्थित है, भौगोलिक रूप से सभी चार विशेषताओं से जुड़ा हुआ है:

- **एन्नोर क्रीक** बंदरगाह के पास स्थित है और इसके तटीय पर्यावरण का हिस्सा बनाती है।
- **पुलिकट झील**, जो भारत की दूसरी सबसे बड़ी खारे पानी की लैगून (lagoon) है, बंदरगाह के उत्तर में स्थित है।
- **कोसास्थलाईयार नदी** एन्नोर क्षेत्र के पास बंगाल की खाड़ी में गिरती है और स्थानीय मुहाना (estuarine) पारिस्थितिकी तंत्र को काफी हद तक प्रभावित करती है।
- ऐतिहासिक **बकिंघम नहर** चेन्नई-एन्नोर क्षेत्र के माध्यम से तट के समानांतर चलती है और आसपास के तटीय परिदृश्य से जुड़ी हुई है।

दैनिक अभ्यास हेतु विषय आधारित प्रश्न

GS 1

Q1. "भक्ति आंदोलन ने मध्यकालीन भारत की धार्मिक और सामाजिक परंपराओं में निरंतरता और परिवर्तन दोनों का प्रतिनिधित्व किया।" भक्ति परंपराओं के विकास के प्रकाश में इस कथन का समालोचनात्मक परीक्षण कीजिए। (15 अंक, 250 शब्द)

नमूना उत्तर

सातवीं से सत्रहवीं शताब्दी के बीच मध्यकालीन भारत में भक्ति आंदोलन सबसे प्रभावशाली धार्मिक विकास के रूप में उभरा। किसी चुने हुए इष्टदेव के प्रति व्यक्तिगत भक्ति में निहित, इसने बदलते राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों का जवाब देते हुए भक्त और भगवान के बीच के संबंध को फिर से परिभाषित करने का प्रयास किया। यद्यपि इस आंदोलन ने पूर्ववर्ती हिंदू परंपराओं से कई तत्वों को विरासत में प्राप्त किया, लेकिन इसने धार्मिक अभ्यास और सामाजिक विचार में महत्वपूर्ण बदलाव भी पेश किए।

भक्ति परंपरा ने कई मायनों में निरंतरता का प्रतिनिधित्व किया। इसने मुक्ति के एक वैध मार्ग के रूप में कर्म, धर्म, मोक्ष और भक्ति जैसे मुख्य दार्शनिक विचारों में विश्वास को बनाए रखा। विष्णु, शिव और शक्ति की पूजा पहले की सदियों में भी मौजूद थी, और भक्ति संतों ने इन परंपराओं को पूरी तरह से खारिज करने के बजाय उनके आधार पर निर्माण

किया। कई क्षेत्रों में मंदिर पूजा, तीर्थाटन और संरक्षण के महत्वपूर्ण केंद्र बने रहे। दक्षिण भारत में अलवारों और नयनारों के भक्ति भजनों ने क्षेत्रीय पूजा रूपों को मजबूत करते हुए पूर्ववर्ती पौराणिक परंपराओं के साथ निरंतरता को दर्शाया।

साथ ही, इस आंदोलन ने गहरे बदलावों की शुरुआत की। कबीर, गुरु नानक, रविदास, तुकाराम और मीराबाई जैसे संतों ने कठोर कर्मकांड, पुरोहित वर्चस्व और जातिगत विशिष्टता को चुनौती दी। उन्होंने विस्तृत अनुष्ठानों या संस्कृत शिक्षा के मध्यस्थ के बिना भगवान के साथ सीधे संवाद पर जोर दिया। संस्कृत के बजाय क्षेत्रीय भाषाओं के उपयोग ने धार्मिक ज्ञान का लोकतंत्रीकरण किया और साधारण लोगों के बीच व्यापक भागीदारी को सक्षम बनाया। भक्ति साहित्य ने हिंदी, मराठी, बंगाली और पंजाबी जैसी क्षेत्रीय भाषाओं के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

इस आंदोलन ने जाति, पेशे या लिंग की परवाह किए बिना भक्तों को स्वीकार करके सामाजिक समावेशिता को भी बढ़ावा दिया। अंडाल, आक्का महादेवी और मीराबाई जैसी महिला संतों ने पितृसत्तात्मक मानदंडों पर सवाल उठाया और आध्यात्मिक समानता पर जोर दिया। भक्ति संतों और सूफी परंपराओं के बीच बातचीत ने सार्वभौमिक भाईचारे, प्रेम और करुणा के विचारों को और प्रोत्साहित किया, जिससे मध्यकालीन भारत में सांस्कृतिक संश्लेषण को बढ़ावा मिला।

हालांकि, इस आंदोलन ने पूरी तरह से जातिगत भेदों या सामाजिक असमानताओं को समाप्त नहीं किया। कई क्षेत्रों में, संस्थागत भक्ति परंपराएं धीरे-धीरे मौजूदा सामाजिक पदानुक्रम के अनुकूल हो गईं, और समय के साथ कई संप्रदायों ने अपने स्वयं के अनुष्ठान और रूढ़िवादी प्रथाओं को विकसित कर लिया।

इस प्रकार, भक्ति आंदोलन न तो अतीत से पूरी तरह से नाता था और न ही पूर्ववर्ती परंपराओं का केवल एक निरंतरता था। इसके बजाय, इसने एक गतिशील संश्लेषण का प्रतिनिधित्व किया जिसने धार्मिक अभ्यास, भाषा, साहित्य और सामाजिक विचार को नया आकार देते हुए भारत की आध्यात्मिक विरासत को संरक्षित किया, और भारतीय सभ्यता पर एक स्थायी छाप छोड़ी।

GS 2

Q2. "भारत में संघवाद चरित्र में संवैधानिक और सहकारी दोनों है। हालांकि, उभरती शासन चुनौतियां केंद्र-राज्य संबंधों की पुनर्भाषा की मांग करती हैं।" चर्चा कीजिए। (15 अंक, 250 शब्द)

नमूना उत्तर

भारत का संविधान राष्ट्रीय एकता को क्षेत्रीय विविधता के साथ संतुलित करते हुए एक मजबूत संघ के साथ एक संघीय प्रणाली स्थापित करता है। जबकि विधायी, कार्यकारी और वित्तीय शक्तियां केंद्र और राज्यों के बीच संवैधानिक रूप से वितरित की जाती हैं, भारतीय संघवाद की सफलता तेजी से अकेले संवैधानिक प्रावधानों के बजाय सहकारी शासन पर निर्भर करती है। जलवायु परिवर्तन, आंतरिक प्रवास, डिजिटल शासन और सार्वजनिक स्वास्थ्य जैसी समकालीन शासन चुनौतियों ने केंद्र-राज्य सहयोग को मजबूत करने की आवश्यकता को और उजागर किया है।

भारतीय संघवाद का संवैधानिक आधार सातवीं अनुसूची में झलकता है, जो संघ, राज्य और समवर्ती सूचियों के माध्यम से शक्तियों को विभाजित करती है। वित्त आयोग, चुनाव आयोग और सर्वोच्च न्यायालय जैसे स्वतंत्र संवैधानिक निकाय इस संतुलन को बनाए रखने के लिए संस्थागत सुरक्षा प्रदान करते हैं। संविधान सरकारों के बीच समन्वय की सुविधा के लिए अंतर-राज्यीय परिषद की स्थापना के लिए अनुच्छेद 263 जैसे तंत्र भी प्रदान करता है।

समय के साथ, सहकारी संघवाद एक व्यावहारिक आवश्यकता के रूप में उभरा है। जीएसटी परिषद जैसी संस्थाएं सहयोगात्मक निर्णय लेने का उदाहरण देती हैं, जहां संघ और राज्य दोनों आम सहमति से अप्रत्यक्ष कर नीतियों को तैयार करने में भाग लेते हैं। आकांक्षी जिला कार्यक्रम, जल जीवन मिशन और पीएम गति शक्ति भी सरकार के कई

स्तरों से जुड़े समन्वित कार्यान्वयन को प्रदर्शित करते हैं। ऐसा सहयोग नीतिगत सुसंगतता में सुधार करता है और राष्ट्रीय विकास कार्यक्रमों की प्रभावशीलता को बढ़ाता है।

फिर भी, कई चुनौतियों ने केंद्र-राज्य संबंधों को तनावपूर्ण बना दिया है। जीएसटी मुआवजे के वितरण, केंद्र प्रायोजित योजनाओं, केंद्रीय जांच एजेंसियों के उपयोग, राज्यपाल के विवेक, वित्तीय हस्तांतरण में देरी और अधिक राजकोषीय स्वायत्तता की बढ़ती मांगों को लेकर विवादों ने घर्षण पैदा किया है। क्षेत्रीय आकांक्षाएं, अंतर-राज्यीय नदी जल विवाद और अलग-अलग राजनीतिक विचारधाराएं अक्सर सहकारी शासन को जटिल बनाती हैं। साथ ही, साइबर सुरक्षा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, आपदा प्रबंधन और जलवायु अनुकूलन जैसी नई चुनौतियों के लिए एकीकृत नीतिगत प्रतिक्रियाओं की आवश्यकता होती है जो पारंपरिक संवैधानिक विभाजनों से परे हैं।

सरकारिया आयोग और पुंछी आयोग की सिफारिशें प्रासंगिक बनी हुई हैं। अंतर-राज्यीय परिषद को मजबूत करना, नियमित विचार-विमर्श को संस्थागत बनाना, राजकोषीय विकेंद्रीकरण का विस्तार करना, पारदर्शी विवाद समाधान को बढ़ावा देना और राष्ट्रीय नीति निर्माण में राज्यों की अधिक भागीदारी को प्रोत्साहित करना सहकारी संघवाद को सुदृढ़ करेगा। राजनीतिक टकराव के बजाय साक्ष्य-आधारित नीति संवाद पर अधिक भरोसा भी केंद्र-राज्य के विश्वास में सुधार कर सकता है।

इसलिए, भारतीय संघवाद केवल एक संवैधानिक व्यवस्था नहीं बल्कि एक विकसित होने वाला शासन ढांचा है। हालांकि संवैधानिक सुरक्षा उपाय स्थिरता प्रदान करते हैं, भारत के लोकतांत्रिक शासन का भविष्य जटिल विकासात्मक और प्रशासनिक चुनौतियों का प्रभावी ढंग से जवाब देने में सक्षम सहकारी संस्थाओं को गहरा करने पर निर्भर करता है।

GS 3

Q3. "बुनियादी ढांचे का विकास आर्थिक विकास का चालक और समावेशी विकास की पूर्व शर्त दोनों है। भारत में सतत आर्थिक विकास प्राप्त करने में बुनियादी ढांचे की भूमिका का समालोचनात्मक परीक्षण कीजिए।" (15 अंक, 250 शब्द)

नमूना उत्तर

बुनियादी ढांचा उत्पादन, व्यापार और मानव विकास के लिए आवश्यक भौतिक और संस्थागत नींव प्रदान करके किसी अर्थव्यवस्था की रीढ़ बनता है। इसमें परिवहन, ऊर्जा, संचार, सिंचाई, जलापूर्ति, स्वच्छता और डिजिटल कनेक्टिविटी शामिल हैं। भारत जैसी विकासशील अर्थव्यवस्था में, मजबूत बुनियादी ढांचा न केवल आर्थिक विकास को तेज करता है बल्कि न्यायसंगत क्षेत्रीय विकास और जीवन की बेहतर गुणवत्ता भी सुनिश्चित करता है।

बुनियादी ढांचा लेनदेन लागत को कम करके, उत्पादकता में सुधार करके और बाजार के एकीकरण को सुविधाजनक बनाकर आर्थिक विकास को बढ़ावा देता है। कुशल सड़क और रेल नेटवर्क लॉजिस्टिक्स दक्षता बढ़ाते हैं, जबकि बंदरगाह और हवाई अड्डे वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं के साथ भारत के एकीकरण को मजबूत करते हैं। विश्वसनीय बिजली औद्योगिक विस्तार को सक्षम बनाती है, निवेश को प्रोत्साहित करती है और तकनीकी नवाचार का समर्थन करती है। डिजिटल इंडिया और भारतनेट जैसी पहलों के माध्यम से डिजिटल बुनियादी ढांचे ने ग्रामीण आबादी को डिजिटल प्लेटफार्मों से जोड़कर शासन, वित्तीय समावेशन और सेवा वितरण को बदल दिया है।

आर्थिक विस्तार से परे, बुनियादी ढांचा समावेशी विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत ग्रामीण सड़कों में निवेश ने शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और बाजारों तक पहुंच में सुधार किया है। सिंचाई परियोजनाएं कृषि उत्पादकता बढ़ाती हैं और मानसूनी वर्षा पर निर्भरता कम करती हैं, जिससे किसानों की आय बढ़ती है। मेट्रो रेल प्रणालियों, स्मार्ट शहरों और स्वच्छता सुविधाओं सहित शहरी बुनियादी ढांचा, बेहतर जीवन स्तर और

टिकाऊ शहरीकरण में योगदान देता है। स्वास्थ्य सेवा और शैक्षिक बुनियादी ढांचा मानव पूंजी को मजबूत करते हैं, जो दीर्घकालिक आर्थिक विकास के लिए अपरिहार्य है।

हालांकि, बुनियादी ढांचा विकास महत्वपूर्ण चुनौतियां भी प्रस्तुत करता है। भूमि अधिग्रहण विवाद, पर्यावरणीय क्षरण, परियोजना कार्यान्वयन में देरी, वित्तपोषण बाधाएं और क्षेत्रीय असमानताएं अक्सर परियोजना की प्रभावशीलता को सीमित करती हैं। यदि पर्यावरणीय सुरक्षा उपायों को नजरअंदाज किया जाए तो बड़े पैमाने पर बुनियादी ढांचा परियोजनाएं कमजोर समुदायों के विस्थापन और पारिस्थितिक गड़बड़ी का कारण बन सकती हैं। जलवायु परिवर्तन के लिए अत्यधिक मौसम की घटनाओं का सामना करने में सक्षम लचीले बुनियादी ढांचे की भी आवश्यकता है।

इन चुनौतियों को पहचानते हुए, सरकार ने एकीकृत योजना में सुधार और निवेश जुटाने के लिए नेशनल इन्फ्रास्ट्रक्चर पाइपलाइन (NIP), पीएम गति शक्ति नेशनल मास्टर प्लान, नेशनल मोनेटाइजेशन पाइपलाइन (NMP) और राष्ट्रीय लॉजिस्टिक्स नीति जैसी पहल शुरू की हैं। साथ ही, नवीकरणीय ऊर्जा बुनियादी ढांचे का विस्तार और हरित परिवहन प्रणालियों को बढ़ावा देना सतत विकास और इसकी जलवायु प्रतिबद्धताओं के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

निष्कर्ष में, बुनियादी ढांचे को केवल एक आर्थिक संपत्ति के रूप में नहीं बल्कि सामाजिक परिवर्तन के साधन के रूप में देखा जाना चाहिए। भविष्य की बुनियादी ढांचा योजना को पर्यावरणीय स्थिरता, तकनीकी नवाचार और सामाजिक समानता के साथ आर्थिक दक्षता को एकीकृत करना चाहिए। ऐसा दृष्टिकोण भारत को समावेशी विकास, सतत विकास के उद्देश्यों और 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने के दृष्टिकोण को प्राप्त करने में सक्षम बनाएगा।

GS 4

Q4. "लोक प्रशासन अक्सर ऐसे नैतिक निर्णयों की मांग करता है जहां अकेले कानूनी प्रावधान पर्याप्त मार्गदर्शन प्रदान नहीं कर सकते हैं। नैतिक शासन सुनिश्चित करने में सत्यनिष्ठा, सहानुभूति और जवाबदेही के महत्व की चर्चा कीजिए। उपयुक्त उदाहरणों के साथ अपने उत्तर को स्पष्ट कीजिए।" (15 अंक, 250 शब्द)

नमूना उत्तर

नैतिकता लोक सेवकों को बड़े जनहित में काम करने के लिए मार्गदर्शन करके अच्छे शासन की नींव बनाती है। हालांकि कानून आचरण के न्यूनतम मानक निर्धारित करते हैं, लेकिन नैतिक मूल्य सिविल सेवकों को प्रतिस्पर्धी हितों, सीमित संसाधनों और नैतिक दुविधाओं से जुड़ी जटिल स्थितियों को नेविगेट करने में मदद करते हैं। इन मूल्यों में, सत्यनिष्ठा (integrity), सहानुभूति (empathy) और जवाबदेही (accountability) नैतिक लोक प्रशासन की आधारशिला हैं।

सत्यनिष्ठा मूल्यों, निर्णयों और कार्यों के बीच स्थिरता को संदर्भित करती है। सत्यनिष्ठा से लैस एक सिविल सेवक संवैधानिक सिद्धांतों को निष्ठा से बरकरार रखते हुए भ्रष्टाचार, राजनीतिक दबाव और व्यक्तिगत लाभ का विरोध करता है। सत्यनिष्ठा संस्थानों में जनता के विश्वास को बढ़ावा देती है और यह सुनिश्चित करती है कि प्रशासनिक निर्णय निष्पक्ष और पारदर्शी बने रहें। उदाहरण के लिए, जो अधिकारी संस्थागत दबावों के बावजूद खरीद अनियमितताओं को उजागर करते हैं, वे नैतिक शासन के प्रति प्रतिबद्धता प्रदर्शित करते हैं।

सुविधाजनक रूप से प्रक्रियात्मक औपचारिकताओं पर पूरी तरह भरोसा करने के बजाय, सहानुभूति प्रशासकों को समाज के विभिन्न वर्गों, विशेष रूप से हाशिए के समुदायों की जरूरतों और आकांक्षाओं को समझने में सक्षम बनाती है। जब अधिकारी नागरिकों के जीवन के अनुभवों की सराहना करते हैं तो सार्वजनिक नीतियां अधिक उत्तरदायी हो जाती हैं। प्राकृतिक आपदाओं के दौरान, सहानुभूतिपूर्ण प्रशासक अक्सर यह सुनिश्चित करते हुए कि कमजोर आबादी

को समय पर राहत मिले, तत्काल मानवीय सहायता को प्राथमिकता देते हैं। ऐसा दृष्टिकोण प्रशासनिक प्रभावशीलता और जनविश्वास दोनों को बढ़ाता है।

जवाबदेही यह सुनिश्चित करती है कि सार्वजनिक शक्ति का प्रयोग जिम्मेदारी से किया जाए और यह संस्थागत जांच के अधीन रहे। सामाजिक लेखा परीक्षा, सूचना का अधिकार, संसदीय oversight, स्वतंत्र सतर्कता संस्थान और न्यायिक समीक्षा जैसे तंत्र निर्णय निर्माताओं को उनके कार्यों के लिए जवाबदेह बनाकर जवाबदेही को मजबूत करते हैं। जवाबदेही सार्वजनिक संसाधनों के कुशल उपयोग को भी प्रोत्साहित करती है और शासन में मनमानेपन को कम करती है।

संकट के दौरान इन तीनों मूल्यों की परस्पर क्रिया विशेष रूप से स्पष्ट होती है। उदाहरण के लिए, सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातकाल के दौरान, एक प्रशासक को ईमानदारी से जोखिमों का संचार करना चाहिए (सत्यनिष्ठा), नागरिकों की कठिनाइयों को समझना चाहिए (सहमति), और नीति कार्यान्वयन के लिए जवाबदेह रहना चाहिए (जवाबदेही)। इसलिए नैतिक नेतृत्व यह सुनिश्चित करके कानूनी अनुपालन का पूरक बनता है कि शासन मानवीय, पारदर्शी और नागरिक-केंद्रित रहे।

फिर भी, नैतिक शासन को राजनीतिक हस्तक्षेप, संसाधन बाधाओं, नौकरशाही की सुस्ती और परस्पर विरोधी हितधारक अपेक्षाओं सहित चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। निरंतर नैतिकता प्रशिक्षण, पारदर्शी भर्ती, संस्थागत सुरक्षा उपाय, प्रौद्योगिकी-संचालित शासन और विसलब्लोअर के लिए सुरक्षा लोक प्रशासन के भीतर नैतिक मानकों को मजबूत कर सकती है।

अंततः, नैतिक शासन केवल कदाचार से बचने के बारे में नहीं है बल्कि संवैधानिक नैतिकता और जन कल्याण को बढ़ावा देने के बारे में है। सत्यनिष्ठा ईमानदारी सुनिश्चित करती है, सहानुभूति प्रशासन को मानवीय बनाती है और जवाबदेही लोकतांत्रिक वैधता को मजबूत करती है। साथ ही, ये मूल्य शासन को न्याय, समावेशिता और सतत विकास के साधन में बदल देते हैं।

(करेंट अफेयर्स – ब्राजील का जैव ईंधन अपनाना)

Q5. "ब्राजील का जैव ईंधन को सफलतापूर्वक अपनाना यह प्रदर्शित करता है कि ऊर्जा सुरक्षा, जलवायु कार्रवाई और कृषि विकास एक-दूसरे को सुदृढ़ कर सकते हैं। चर्चा कीजिए कि भारत अपनी ऊर्जा के संक्रमण के संदर्भ में ब्राजील के जैव ईंधन मॉडल से क्या सबक ले सकता है।" (15 अंक, 250 शब्द)

नमूना उत्तर

स्वच्छ ऊर्जा की ओर वैश्विक संक्रमण ने जीवाश्म ईंधन के स्थायी विकल्प के रूप में जैव ईंधन के महत्व को बढ़ा दिया है। ब्राजील को व्यापक रूप से दुनिया के सबसे सफल जैव ईंधन अपनाने के उदाहरणों में से एक माना जाता है, विशेष रूप से गन्ने पर आधारित इथेनॉल के बड़े पैमाने पर उत्पादन और उपयोग के माध्यम से। इसका अनुभव यह प्रदर्शित करता है कि कृषि संसाधन, तकनीकी नवाचार और सहायक सार्वजनिक नीति सामूहिक रूप से ऊर्जा सुरक्षा, जलवायु शमन और ग्रामीण विकास में कैसे योगदान दे सकते हैं। भारत के लिए, जिसने इथेनॉल मिश्रित पेट्रोल (EBP) कार्यक्रम और राष्ट्रीय जैव ईंधन नीति के तहत महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किए हैं, ब्राजील का मॉडल मूल्यवान नीतिगत सबक प्रदान करता है।

ब्राजील की जैव ईंधन सफलता मुख्य रूप से प्रचुर मात्रा में गन्ने की खेती, उच्च इथेनॉल उत्पादकता और फ्लेक्स-ईंधन वाहन प्रौद्योगिकी को व्यापक रूप से अपनाने पर आधारित है। ब्राजील में बिकने वाले लगभग सभी नए यात्री वाहन गैसोलीन, इथेनॉल या दोनों के किसी भी संयोजन पर संचालित होने में सक्षम हैं। यह लचीलापन उपभोक्ताओं को

आयातित कच्चे तेल पर निर्भरता कम करते हुए प्रचलित कीमतों के आधार पर ईंधन चुनने की अनुमति देता है। दीर्घकालिक नीति स्थिरता, अनुसंधान और विकास में निवेश, इथेनॉल उत्पादन के लिए प्रोत्साहन और कुशल आपूर्ति श्रृंखलाओं के माध्यम से सरकारी समर्थन ने एक परिपक्व और प्रतिस्पर्धी जैव ईंधन पारिस्थितिकी तंत्र बनाया है।

भारत ने अपने इथेनॉल मिश्रित पेट्रोल कार्यक्रम के माध्यम से उल्लेखनीय प्रगति की है, हाल के वर्षों में सम्मिश्रण स्तरों में काफी वृद्धि की है। हालांकि, भारत की फीडस्टॉक उपलब्धता ब्राजील से अलग है। जबकि गन्ना एक महत्वपूर्ण स्रोत बना हुआ है, भारत को खाद्य सुरक्षा, भूजल की कमी और एक ही फसल पर अत्यधिक निर्भरता से संबंधित चिंताओं से बचने के लिए कृषि अवशेषों, नगरपालिका ठोस कचरे और अन्य गैर-खाद्य बायोमास से उत्पादित दूसरी पीढ़ी (2G) जैव ईंधन की ओर विविधता लानी चाहिए। संपीड़ित बायोगैस (CBG), सस्टेनेबल एविएशन फ्यूल (SAF) और उन्नत जैव ईंधन को प्रोत्साहित करना भारत के स्वच्छ ऊर्जा पोर्टफोलियो को और व्यापक बना सकता है।

ब्राजील कृषि को ऊर्जा नीति के साथ एकीकृत करने के महत्व को भी उजागर करता है। स्थिर मूल्य निर्धारण तंत्र, सुनिश्चित खरीद, तकनीकी नवाचार और किसान की भागीदारी ने पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देते हुए ग्रामीण आय को बढ़ाया है। भारत इसी तरह किसान-उत्पादक संगठनों को मजबूत कर सकता है, बायोमास संग्रह बुनियादी ढांचे में सुधार कर सकता है और उन्नत बायो-रिफाइनरी में निजी निवेश को प्रोत्साहित कर सकता है। साथ ही, सख्त स्थिरता मानकों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि जैव ईंधन का विस्तार जैव विविधता या पारिस्थितिक संतुलन को प्रतिकूल रूप से प्रभावित न करे।

फिर भी, ब्राजीलियाई मॉडल को अनुकूलन के बिना दोहराया नहीं जा सकता है। भारत की विविध कृषि-जलवायु परिस्थितियों, विखंडित जोतों और अलग-अलग क्षेत्रीय फसल पैटर्न के लिए एक विकेंद्रीकृत और क्षेत्र-विशिष्ट दृष्टिकोण की आवश्यकता है। जैव ईंधन नीति को उनके साथ प्रतिस्पर्धा करने के बजाय खाद्य सुरक्षा, जल संरक्षण और जलवायु लचीलापन का पूरक होना चाहिए।

निष्कर्ष में, ब्राजील का अनुभव यह दर्शाता है कि जैव ईंधन आर्थिक विकास और पर्यावरणीय स्थिरता के बीच एक रणनीतिक पुल के रूप में काम कर सकता है। तकनीकी नवाचार, विविध फीडस्टॉक, मजबूत बुनियादी ढांचे और स्थायी कृषि प्रथाओं को बढ़ावा देकर, भारत आत्मनिर्भर भारत, ऊर्जा सुरक्षा, ग्रामीण समृद्धि और शुद्ध-शून्य उत्सर्जन के लक्ष्यों को आगे बढ़ाते हुए अपनी ऊर्जा के संक्रमण को मजबूत कर सकता है।

यूपीएससी मेन्स के लिए मूल्यवर्धन *Dream | Dare | Deliver*

• संबंधित संवैधानिक प्रावधान:

- अनुच्छेद 48A – पर्यावरण का संरक्षण और संवर्धन।
- अनुच्छेद 51A(g) – प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा करने का मौलिक कर्तव्य।

• संबंधित सरकारी पहल:

- राष्ट्रीय जैव ईंधन नीति (2018, बाद में संशोधित)
- इथेनॉल मिश्रित पेट्रोल (EBP) कार्यक्रम
- SATAT पहल
- वैश्विक जैव ईंधन गठबंधन (भारत की G20 अध्यक्षता के दौरान लॉन्च किया गया)

• संबंधित सतत विकास लक्ष्य (SDGs):

- **SDG 7:** किफायती और स्वच्छ ऊर्जा

- **SDG 9:** उद्योग, नवाचार और बुनियादी ढांचा
- **SDG 12:** जिम्मेदार उपभोग और उत्पादन
- **SDG 13:** जलवायु कार्रवाई
- **निष्कर्ष उद्धरण:** "ऊर्जा का भविष्य केवल जीवाश्म ईंधन को बदलने में नहीं है, बल्कि ऐसे स्थायी पारिस्थितिक तंत्र बनाने में है जहाँ कृषि, प्रौद्योगिकी और पर्यावरण संरक्षण एक साथ काम करते हैं।"

